IIJIF
Indexed 1675
GENERAL IMPACTFACTOR
INTERNATIONAL PEER Reviewed JOURNAL
ISSUE-2 VOL-1 IMPACT -1.7216 ISSN-2454-6283 April-June 2013

शोध-ऋतु

सम्पादक
डॉ. सुनील जाधव

तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव

पत्राचार हेतु कार्यालयीन पता -
डॉ.सुनील जाधव,
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,
हनुमान गढ़ कमान के सामने,
नांदेड-४३१६०५, महाराष्ट्र

Email - shodhrityu78@yahoo.com
WhatsApp 9405384672

५. हिंदी ग़ज़ल में सामाजिक चित्रण

ए.बाबू
लेक्चर इन हिंदी वी.आर.कॉलेज,नेल्लोर

साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं है अपितु समाज सापेक्षता है | साहित्यकार संवेदनशील होने के कारण समाज में व्याप्त विसंगतियों का यथार्थ चित्रण करता है |सामाजिक परिवेश में रहने के कारण वह समाज से जुड़ा होता है | साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं मार्गदर्शक भी है | साहित्य समाज के हर्ष उल्लास सुख दुःख , आशा निराशा आदि से ही अपने स्वरूप की रचना करता है | प्रत्येक समाज के जीवन शैली की पद्धतियां होती है , उसकी कुछ मर्यादाएं होती है , नियम कानून होते है , सहयोग की भावना होती है | हमारे भारत देश में यह हर व्यक्ति को आजादी है की वह अपनी बुध्दि और तर्क के आधार पर समाज को जागरूक बना सकें |

जो साहित्य समाज का वास्तविक चित्रण नहीं करता , समाज का कल्याण नहीं करता वह साहित्य , साहित्य कहलाने योग्य नहीं है |साहित्य की सभी विधाओं में ग़ज़ल सबसे लोकप्रिय विधा है जो की समाज के जन जन से जुड़ा हुआ है | ग़ज़ल से सामाजिक चेतना की अभिवयक्ति उसकी जनप्रियता की सबसे बड़ी शक्ति है | डॉ गिरिराजशरण अग्रवाल के शब्दों में " ग़ज़ल को सामाजिक संदर्भो से जोड़ने का यह सकारात्मक पहलू ही है जिसने उसे प्रेम , वियोग , व्यक्तिगत पीड़ा मिलन और जुदाई जैसे सिमित दायरों वाले विषयों से निकलकर मानव जीवन की व्यापक धरातल पर उतारा है |" अत: आज हिंदी ग़ज़ल में सामाजिक चित्रण की अभिव्यक्ति बड़ी प्रखरता से हुई है |

समकालीन हिंदी ग़ज़ल में सामाजिक चित्रण के विविध आयाम दृष्टिगोचर होते हैं | हिंदी ग़ज़ल में मानवीय संवेदना को सर्वप्रथम स्थान दुष्यंत कुमार जी ने अपनी गजलों में दिया है | " सायें में धूप" ग़ज़ल संग्रह ने सरे भारत वर्ष में तहलका मचा दिया था |

दुष्यंत कुमार जी की परिस्थितियों की आलोचना करने के पीछे उनका उद्देश्य कोई हंगामा खड़ा खड़ा करना नहीं है , न ही कोई स्वार्थ | अपितु वे तो परिश्थितियों में बस परिवर्तन चाहते है जिससे की समाज को नयी दिशा मिल सकें –

" सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है की सूरत बदलनी चाहिए |(1)

समाज में गरीबी अपनी चरम सीमा अवस्था पर पहुच चुकी है | भारतीय समाज में आर्थिक विषमता परिलक्षित होती है | जिसके कारण भारत में दरिद्रता बढती जा रही है | भारत को लेकर बड़ी बड़ी बातें दुष्यंत जी को पसंद नहीं हैं | " जहाँ डाल डाल पर सोने की चिड़ियाँ करती हैं बसेरा , वह भारत देश है मेरा" यह मात्र अब कहने के लिए बन कर गया है दृश्य अब नज़र नहीं आता | दुष्यंत जी को स्वतंत्र भारत की तस्वीर कुछ इस प्रकार दिखाई देती है –

" कल नुमाइश में मिला वो चीथड़े पहने हुए
मैंने पूछा नाम तो बोला की हिंदुस्तान है |(2)

हमारे भारत देश को कृषि प्रधान देश कहा जाता है लेकिन आज की जो हमारी संस्कृति है वह न तो कृषि प्रधान है न पुरुष प्रधान न नारी प्रधान रह गयी है , वह तो बस अर्थ प्रधान बन कर रह गयी है | मनुष्य के जीवन का मूल्य बस धन दौलत के ही आधार पर नियंत्रित रहने लगा है | इसका चित्रण चंद्रसेन विरत जी करते है –

" मूल्य मानव के स्खलित पशुवृतियों के सामने
अब ह्रदय पर सिर्फ पैसो का हुनर हावी हुआ |(3)

आज कल के लोग अपने दुःख से दुखी न होकर दुसरो की ख़ुशी से दुखी होते है | इस समाज के लोग इस कदर बहक गए है की उन्हें रिश्तों नातों की कोई कीमत नहीं है , वे स्वार्थी हो गए है | इस नयी सभ्यता पर वयंग्य कसते हुए जहीर कुरेशी जी अपनी गजल में लिखते है –

" लोग झरते फूल पातो पर हँसे
लोग रो लेने की बातों पर हँसे

सभ्यता ने इस कदर बहका दिया
लोग रिश्तों और नातों पर हँसें"(4)

नारी देवी है उनको पूजा जाता है | माँ , बहन , पत्नी , घर की इज्जत होती है इनको सम्मान दिया जाता है लेकिन इस सभ्यता के लोग घर की इज्जत को सरेआम बाजार में बेंच रही है | इस घिनौनी समाज के पति अपने अधिकारीयों से अपने पक्ष के करवाने के लिए उनके बिस्तर पर अपनी पत्नी को सुलाने में संकोच नहीं करते | इस समाज में आदमी इतना गिर चुका है की वो तरक्की के लिए भी कुछ कर सकते हैं –

" महत्वाकांक्षी पति के इशारे पर
गई थी कल भी वो साहब के बिस्तर तक"(5)

बर्तमान पीढ़ी के लोगो की फैशन भी अजीबों गरीब हैं | लड़के लड़कियों की तरह बाल लम्बे कर रहे हैं और लडकिय लडक तरह बाल कटवा रही है | इस फैशन के कारण लड़का भी लड़की नज़र आता है | ऐसी स्थिति में काका हाथरसी का क्या दोष है –

" इस नए फैशन ने काका बाल लम्बे कर दिए
आज कल छोरे लगते छोकरी , हम क्या करें"(6)

आज के समाज में नैतिक मूल्यों का विघटन हो रहा हैं इन्सान इतने अजीब हो गए है की उनको पेचानना मुश्किल हो गया है कब किस समय धोखा दे दे कब कोई सदमा पंहुचा दे कहा नहीं जा सकता| आज के आदमी की स्थिति ऐसी हो गयी इस बात को कुंअर जी अपनी ग़ज़ल में कहते है –

" न तो गाँवों ने हमें और न शहर ने काटा
हमको इंसानों के इक मीठे जहर ने काटा"(7)

आज समाज में नैतिकता के मापदंड बदल गए है अपराधो का ही बोलबाला है | आज आदमी ईमानदारी और सच्चाई पर चल उसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है | सच्चाई ईमानदारी और विश्वास तो किताबी भाषा बनकर रह गयी है | लोग अपने स्वार्थ के लोगो को दी हुयी जुबान से भी आसानी मुकर जाते है

"इमान बदल देते है तारीख की तरह
इन झूठ का इतिहास है मेरी गली के लोग"(8)

आज के समाज में शराफत का चोला ओढ़े हुए व्यक्ति सही अर्थो में बदचलन हैं | इनकी कथनी और करनी में अंतर होती है बात को गोपालदास नीरज ने बड़ी सुन्दरता से प्रस्तुत किया है –

" बदन पर जिसने शराफत का पैराहन देखा
वो आदमी भी यहाँ हमने बदचलन देखा"(9)

आज का आदमी दोहरी जिंदगी जी रहा है | उसके बहरी आचरण कुछ और है तथा भीतरी कुछ और | अपने जीवन में ऐश्व वैभव की लालसा के फलस्वरूप लोभ प्रवृत्ति इस कदर बढ़ गयी है की ईमान बदल देना आज के आदमी की आदत बन गयी है| इस क दृष्टि में रखते हुए चंद्रसेन विराट लिखते है –

" वैसे बड़े जहीन है मेरे शहर के लोग
कुछ कुछ कमीन है मेरे शहर के लोग
मन से तो है कुरूप किसी प्रेत की तरह
तन से बड़े हसीन हैं मेरे शहर के लोग"(10)

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि समकालीन हिंदी ग़ज़लकारों ने बड़ी व्यापकता और गहनता के साथ सामाजिकता का किया है तथा सामाजिक समस्याओं को अपनी गजलों के माध्यम से उजागर किया है | सम्पूर्ण सामाजिक समस्याओ को समकालीन गज़लकारों ने अपनी गजलों में चित्रित किया है | समाज में आज इतना भ्रष्टाचार बढ़ गया है कि जिससे समाज में आज नैतिकता का स्त

प्रतिदिन गिरता जा रहा है और अपनों से कटते जा रहे है| अपने स्वार्थ को अधिक महत्व देने लगे है | समाज में जिस प्रकार कि गतिविधियाँ चल रही हैं इसकी जानकारी मिलती है | यह ग़ज़लें हमें समाज में उत्पन्न होने वाली विभिन्न समस्याओं से अवगत कराती है तथा सामाजिक समस्याओं में परिवर्तन हेतु प्रेरित भी करती है | समकालीन हिंदी गजलकारों ने अपनी गजलों के माध्यम से जिस सामाजिक समस्या पर अपनी लेखनी चलायी है वह सम्पूर्ण समाज की समस्या है |

सन्दर्भ सूची

1- सायें में धूप-दुष्यंत कुमार- पृष्ठ 30
2- वही – पृष्ठ – 57
3- हिंदी की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़लें – डॉ गिरिराजशरण अग्रवाल –पृष्ठ 69
4- चांदनी का दुःख – जहीर कुरेशी –पृष्ठ – 71
5- वही – पृष्ठ 21
6- हिंदी की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़लें – डॉ गिरिराजशरण अग्रवाल –पृष्ठ 43
7- रस्सियाँ पानी की –डॉ कुंअर बेचैन –पृष्ठ 61

ISSN-2454-6283